हाजो के
केंद्रीय संरक्षित स्मारक

श्रीश्री हयग्रिव माधव मंदिर, हाजो (1583 ईस्वी)

सत्यमेव जयते

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
गुवाहाटी मंडल

2016

गरुढ़ के उपर सवार विष्णु

हाजो, गुवाहाटी के 25 की. मी. उत्तर पश्चिम पर स्थित विशाल ऐतिहासिक महत्व वाला एक छोटा नगरक्षेत्र, असम के सांस्कृतिक इतिहास में एक अनूठा स्थान रखता है। यह क्षेत्र इस इलाके के एकांकी पहाडियों पर स्थित काफी सारे प्रतिष्ठित मंदिरों के साथ-साथ इस्लामी आस्था के पवित्र मकबरे के लिए एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान का केंद्र है। इस स्थान का प्रसंग ऐतिहासिक लिपियों तथा पुराणिक साहित्यों में पाया जाता है। इस स्थान का वर्णन तिब्बति पंरपराओं में भी पाया जाता है, जिनका बौद्ध धर्म से भी जुर्ड होने का विश्वास है।

हयग्रिव-माधव मंदिर, इस क्षेत्र का विष्णु भगवान को समर्पित एक प्रसिद्ध वैष्णव धाम है। मणिकुट पर्वत के नाम से जनप्रिय एक एकांकी पहाड़ी पर स्थित, यह कोच राजाओं द्वारा निर्मित कई मनोहर मंदिरों में से एक है। कोच, इस क्षेत्र में मध्य 16 वीं शताब्दी इस्वी के सत्ताधारियों ने वास्तु परंपरा और अपने सामाज्य का राजनैतिक विस्तार करते हुए, ब्रह्मपुत्र घाटी में अपने गतिविधियां विस्तृत की थी।

इस क्षेत्र की तेरहवीं शताब्दी ईस्वी से पूर्व की वास्तु परंपरा भारत के बाकी हिस्सों में ही प्रचलित प्रवृत्तियों का अनुकरण करती है। मध्यकाल के प्रारंभ में पाला शासकों के दौरान जो निर्माण कार्य गतिशील

मूर्तिकला पटट, श्री श्री हयग्रिव-माधव

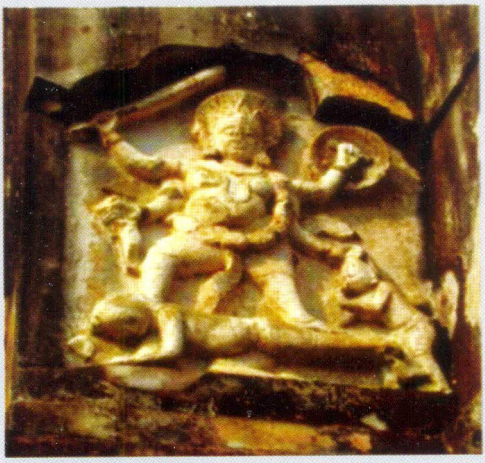

शक्ति की मूर्तिकता, श्री श्री हयग्रिव-माधव

हो चुके थे, 13 वीं शताब्दी ईस्वी के अंत तक इस क्षेत्र के तत्कालीन शासकों के संरक्षण के अभाव में लगभग लुप्त हो चुके थे। निर्माण की परंपरा को इस क्षेत्र के महाकाव्यों में किरात की भूमि के तौर पर वर्णित तथा ब्रह्मपुत्र घाटी के माध्यम से जुडे तिब्बत, बर्मा (म्यांमार) जैसे परौसी देशों के राजाओं के आगमन से पुनर्जीवन प्राप्त हुआ।

तथापि, उत्तरमध्यकालीन युग में कोच राजाओं ने इस क्षेत्र में वास्तुकला की परंपरा को जारी रखा। यह प्रचलन एक नए नमूने के तौर पर उभर कर सामने आया जो कि काफी हद तक परंपरागत तो है परंतु जिसने वास्तुकला में वास्तु के सभी विदेशागत अवयवों को भी सम्मिलित कर लिया। इन निर्माण कार्यो का एक उल्लेखनीय उदाहरण गुवाहाटी के पास नीलाचल पर्वत पर स्थित कामाख्या मंदिर है। इस मंदिर के मूल खडंहर 9वीं शताब्दी ईस्वी के समय के हैं, जिनका सफलतापूर्वक नवीकरण कोच राजवंश के सुप्रसिद्ध राजा नरनारयण (1540-84) के संरक्षण में 1565 ईस्वी में किया गया। वास्तु परंपरा के इस पुनर्जीवन का दूरगामी प्रभाव असम में देर मध्ययुग में आहोम वास्तुकला में भी पड़ते हुए दिखा।

शिला में नक्काशित एक पशु की हत्या, श्री श्री हयग्रिव-माधव

हयग्रिव-माधव के नाम से जनप्रिय हाजो का

मनोहर वैष्णव मंदिर का पुनर्निर्माण कोच राजा रघुदेव (1581-1603 ईस्वी) ने 10वीं-11वीं शताब्दी ईस्वी के प्राचीन मंदिर खंडहरों के ऊपर कराया जो कि मंदिर के तहखाने में मौजूद खंभों के चौंखूंटों के सांचों पर हाथियों (गजरथा) की चित्रवल्लरी तथा रूपरेखा आभार के ज्यामितीय नमूनों से प्रतिबिंबित होता है। मंदिर के नगर शिखर को ब्राह्मणी सर्वदेवमंदिरों के विभिन्न देवी-देवताओं के मूर्तियों से मनोहर ढंग से पूरा किया गया है तथा इसके निचले मंजिल का नक्शा गर्वगृह, अंतरतल तथा मंडप के क्रम से मिलकर बनता है। इस संरचना के तोरणदार प्रवेशद्वार वाले चौरस छत वाले मंडप को मंदिर के चारों कोनों पर स्थित चार विशाल खंभों द्वारा सहारा दिया गया है।

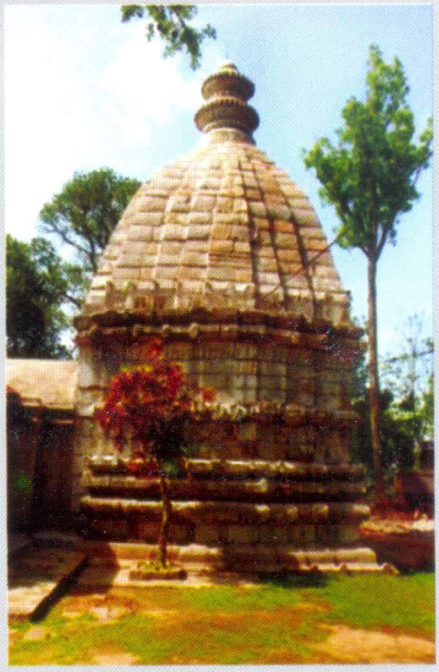

श्री श्री केदार मंदिर, हाजो

हाजो के अन्य प्रसिद्ध मंदिरों में केदारेश्वर, कमलेश्वर एवं गणेश शामिल हैं जो सभी इस इलाके के एकांकी पहाड़ियों पर स्थित हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण मंदिर है केदार मंदिर जिसके मुख्य कक्ष में एक शिवलिंग स्थापित है और जिसका उल्लेख तांत्रिक तथा पुराणिक साहित्यों में भी किया गया है। इस मंदिर से जुडा एक शिलान्यास यह दर्शाता है कि आहोम राजा राजेश्वर सिंघ (1751-69) ने मंदिर के

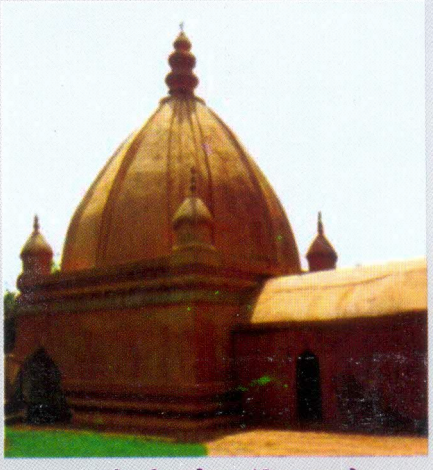

श्री श्री गणेश मंदिर, हाजो

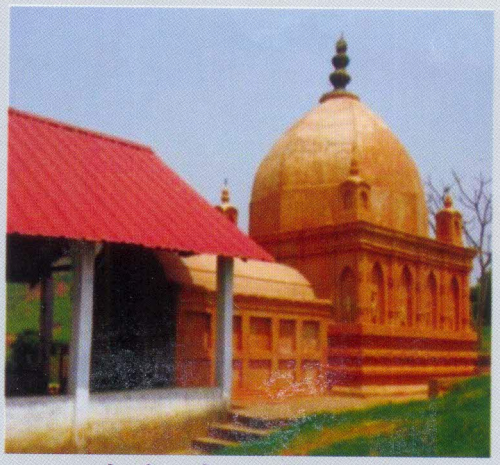

श्री श्री कामेक्ष्वर मंदिर, हाजो

एक छोर से दूसरे छोर तक दो चिनाई कि दीवारों का निर्माणकराया था।

कामेश्वर मंदिर की चिनाई इमारत का निर्माण उत्तर मध्ययुगीन काल में किया गया था और मान्यता यह है कि गणेश के मंदिर, जिसके अंदर एक विशाल गजाकर शिला स्थित है जो आहोम राजा प्रामत्त सिंघ के शासनकाल में 1744 ईस्वी में निर्मित किया गया था।

फकुवा दोल, श्री श्री हयग्रिव-माधव मंदिर

हयग्रिव-माधव मंदिर के निकट स्थित सीढ़िदार चौंखूंटों और गुंबदाकार स्तूपिका वाले एक अन्य स्मारक को फकुवा दोल कहा जाता है। इस स्मारक की बनावट में उस युग के दौरान प्रचलित वास्तुकला के किसी भी विशेषता को नहीं दर्शाता। इस मंदिर की बाहरी संरचना को एक तोरणदार प्रवेश तथा किनारों पर दांतेदार रूपरेखा वाले अष्टभुजाकार नक्शे के ऊपर खड़ा किया गया है।

पर्शियाई शिलालेख, पोवा-मक्का, हाजो

हाजो में पोवा-मक्का का दरगाह इस इलाके के एक अन्य एकांकी पहाड़ी के ऊपर स्थित है। यह

गियासुद्दीन औलिया का मकबरा है जिन्होंने इस क्षेत्र में कुरान के संदेशों का प्रचार-प्रसार किया। इस मकबरे के पास स्थित पुराणी मस्जिद जिसका अब मरम्मत किया गया है, 1657 ईस्वी में मुगल बादशाह शाहजहां के पुत्र मोहम्मद सुजाउहीन द्वारा दान किया हुआ एक पर्शियन शिलालेख को दर्शाता है।

मंदिरों, मकबरों, किलों, महलों, ऐतिहासिक इमारतों, शिलालेखों और पत्थरों के अखंड खंभों के पुरातात्त्विक खंडहर इस इलाके के विभिन्न स्थानों में बिखरे पड़े है। यह हमारा परम कर्त्वय है कि जाति, संप्रदाय एवं धर्म निरपेक्ष होकर हम अपने देश के इन सांस्कृतिक धरोहरों को अपने सही ऐतिहासिक और सौंदर्यपरक चरित में सुरक्षा करें। चलिए हम यह प्रण लेते हैं कि विनाश, क्षति, फेर-बदल, विकृत, विपत्ति अथवा दुरूपयोग नहीं करेंगे।

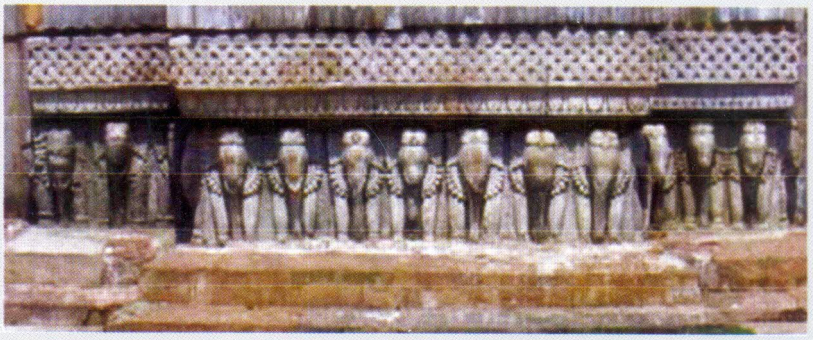

गजरथ पैनल, श्री श्री हयग्रिव-माधव, हाजो

प्रकाशक:
अधीक्षण पुरातत्त्वविद
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
गुवाहाटी मंडल
जी.एन.बी रोड, आमबारी
गुवाहाटी- 781001

ई-मेल- circleguwahati.asi@gov.in
circleguw.asi@gmail.com